प्रश्न 4 ——> सूरदास और तुलसीदास की भक्ति भावना का तुलनात्मक विवेचन कीजिए।

उत्तर ——> तुलसीदास और सूरदास दोनों ही हिन्दी साहित्य के पूर्ण मध्ययुग कवि है दोनो भक्त कवि है। अपने आराध्य के कमल चरणों में अपना सर्वस्व अर्पित करके सम्पूर्ण रूप से उन्ही के हो जाने वाले कवि है, भक्त है, तुलसी के आराध्य राम है तो सूरदास के कृष्ण है एक ने राम भक्ति शाखा का विकास किया है दूसरे ने कृष्ण भक्ति शाखा का उनका युग भक्ति आंदोलन का युग था। भक्ति और ज्ञान का संघर्ष चल रहा था एक हृदय पक्ष की प्रधानता देता था तो दूसरा ज्ञान मार्गी साधना के बुद्धि पक्ष को। यह विविध दार्शनिक विवादों का युग था कंई योगी हठ योगी वैष्णव, शैव तथा शाक्त सभी अपने अपने मत के सिद्धांत प्रतिपादन में लगे हुए थे और अपनी डफली अपना राग रहा था

यद्यपि विषय प्रतिपादन के लिए तर्क बुद्धी का ही आश्रय लेना पड़ता है। समस्त दार्शनीक सिद्धांत इसलिए तर्क सिद्ध है किन्तु विरोधी सांस्कृतिक का सामना करने के लिए रूढ़ी परम्परा तथा अपनी संस्कृति के प्रति श्रद्धा की आवश्यकता की काम करती है यह समय विदेशी संस्कृती यवन संस्कृत के संक्रमण का समय था अपनी संस्कृत को बचाने के लिए यह भी आवश्यक था कि तर्क की अपेक्षा श्रद्धा को बल दिया जाए। श्रद्धा तपस्यावी वस्तु है और वह भक्ति से ही प्राप्त होती है अतः तुलसीदास और सूरदास ने भारतीय संस्कृती के रक्षार्थ ही ज्ञान की अपेक्षा भक्ति को महत्व दिया यद्यपि दोनो पर रामचरित शाखा और कृष्णभक्ति शाखा पर वेदांत और योग का प्रभाव भी था दोनो ही ईश्वर को एक और द्वितीय मानते है वह अनिर्वचनीय उसकी गति कुछ नहीं कही जा सकती है। तुलसी का कथन था "ईश्वर अंश जीव अविनाशी चेतन अमल सहज सुख राशी" अथवा एक अनादि अरूप अनामा तो सूरदास भी ईश्वर को अनिर्वचनीय मानते थे ——

अविगति गति कुछ कहत न आवे" ॥

दोनों ही प्रेम स्वरूपा भक्ति शरणागत एवं आत्म निवेदन की है विशेष रूप से महत्व देते है एवं उसी साधन को अपनाते है वे दार्शनिक विवाद में न पड़कर भक्ति की श्रेष्ठता का सर्वत्र प्रतिपादन करते

तुलसी ने युग की आवश्यकता को समझा उन्होंने सभी मार्गों का समन्वय करने का सफल प्रयास किया वह समन्वय वादी कवि थे। उन्होंने सांख्य और वेदांत भक्ति और ज्ञान सभी के बिच समन्वय किया तथा कही इतिहास पुराण की कथात्मक पद्धती द्वारा तो ही मुक्तक शैली में यह समन्वय स्थापित किया। किन्तु सूरदास दार्शनीक विवादों में न पड़कर पुष्टि मार्ग में दीक्षित होने पर भी भक्ति का सरल रूप से चित्रण कर ते चलते है उनके भक्त हृदय में भक्त गोपियों की सरलता और पीड़ा ही चित्रित की है उनके भोले सरल बयानों से ही भ्रमर गीत में ज्ञान का खंडन हो गया।

अपने युग की परिस्थितियों का भी विशेष रूप से कलीयुग का प्रभाव दोनों कवियों पर पड़ा है यही कारण है कि तुलसीदास ने संत समाज रूपी तिर्थराज के वचन में मोक्ष के लिए तिन साधन भक्ति ज्ञान और कर्म बताते हुए भी भक्ति को प्रधानता दी है तो सूर ने भ्रमरगीत में ज्ञान पर भक्ति की विजय प्रतीपादन की है।

रामचरितमानस में भक्ति की श्रेष्ठतः प्रतीपादित की है वहाँ तर्क के लिए अवसर न देकर श्रोता चुपचाप बात मान लेते है यहाँ वक्ता स्वयं भक्ति के पक्ष में है इसके विपरीत सूरदास की गोपियों के सामने उद्धव ज्ञान का संदेश लेकर आए है।

तुलसी के राम के स्पष्ट कथन है यद्यपि मुझे सभी समदर्शी कहते है फिर भी मै अपने भक्तों को अधिक स्नेह करता हूँ विज्ञानियों से अधिक मुझे भक्त प्रिय है

तुलसी का तर्क है कि ज्ञानी विरला ही हो सकता है जबकि भक्ति के सभी अधिकारी हो सकते है यथा —

पुरुष नपुंसक नारि वा जीव चराचर कोई
सर्व भाव भज कपट तजि मोहि परम प्रिय सोई॥

यद्यपि तुलसी का विचार है कि ज्ञान ही जगत ही नहि कछु भेद उभय हरति भव सम्भव सोवा परन्तु योग साधना तथा ज्ञान का मार्ग बड़ा कठिन है — कहत कठिन समुझत कठिन साधन कठिन विवेक तुलसीदास तर्क वितर्क के लिए कोई स्थान देते है। भक्ति के लिए तर्क की कोई आवश्यकता नही श्रद्धा विश्वास के साथ उसे मन में पाल लीजिए

ज्ञान पर भक्ति की विजय दिखाने के लिए तुलसीदास अनेक उपाय अपनाते है उनमें रूपक एवं दृष्टांत पद्धती मुख्य है रूपक पद्धती का आश्रय लेकर, वह ज्ञान को पुरुष और माया भक्ति को नारी बताते है उनका कहना है कि नारी कभी नारी पर मोहित नही होती — मोहिनि नारी नारी के रूपा। अतः भक्ति मार्ग पर चलने वाला व्यक्ति कभी माया के वशीभूत नही होता। जब की ज्ञानी माया के चक्कर मे फँस जाता है एक स्थान पर तुलसी भक्ति को प्रेयसी और माया को नर्तकी बताते है। राम को भक्ति प्यारी है अतः माया उनके सामने नाचती रहती है एवं भयभीत रहती है। एक स्थान पर तो इन्होंने चिन्तामणी के रूपक में ज्ञान को दीपक और भक्ति को चिन्तामणी मानकर भक्ति की श्रेष्ठता प्रतिपादित की है माया कलुष आदि के झपा से ज्ञान दीप बुझ सकता है। राम की भक्ति चिन्तामणि है "राम भगति चिन्तामनी सुन्दर" जो भी इसके निकट जाता है जब की ज्ञान के कोई आधार नही होने से मन स्थिर नही हो जाता और मन भटकता रहता है

दोनों ही प्रेम ...

उसमें मोह, मद असहायता का सदैव भाव रहता है भक्ति सरल भी है उसमें न जप तप की आवश्यकता है और न उपवास यज्ञादि की। साथ ही यह इसलिए भी सरल है कि लोक में लोकाचार करते हुए भी इसका निर्वाह हो सकता है। ज्ञानी को सदैव भय बना रहता है

सूरदास भी भक्ति की विजय दिखाते है वे द्विविध पद्धति का आश्रय लेकर अपनी सीमा स्वीकार लेते हैं तुलसी ने भक्ति को ज्ञान से श्रेष्ठ बताते हैं और स्पष्ट कहते हैं कि "दम ते अनल प्रकट बस होई, राम विमुख सुख पाव न कोई" और जो गोकुल आदि के चक्कर में घूमते हैं वे मूर्ख है जो काम-धेनु को छोड़कर अन्य को दूध खोजते है परन्तु सूर स्वयं के मार्ग को कठिन बनाकर स्पष्ट स्वीकारते है कि यह अपने बस का नहीं है। बड़ा दुर्गम है सब सुगम मार्ग भक्ति को अपनाते है। प्रेम अबला अहीर ब्रजवासन नारी परन्तु संसारी उन्हें तो प्रेम का रस ही प्रिय है। ज्ञान तो करील फल के समान है और भक्ति अम्बुज रस के समान है अतः भक्ति के समर्थ ज्ञान को कौन चाहेगा :- फिर भला क्या निर्गुण से प्रेम किया जा सकता है —

जाके रूप न रेख बास बपु संगत सरवास फल
ता निर्गुण सो नेह निरंतर क्यों निवेदी री माई॥

वहाँ तो मन निराबल होकर चक्कर ही काटता रहता है इसलिए वह कहते है कि - भगवान साक्षात्कार होता है बिना राम कृपा के भक्ति प्राप्त नहीं होती